



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(68): 68-70

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

लतिका

शोधार्थी, संस्कृतविभागः,
पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रेखावाटी-
यूनिवर्सिटी, कटराथल, सीकर (राजस्थान)

शोध निर्देशकः

डॉ. (प्रो.) संतोष कुमार सोरठा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रेखावाटी-
यूनिवर्सिटी, कटराथल, सीकर (राजस्थान)

Correspondence:

लतिका

शोधार्थी, संस्कृतविभागः,
पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रेखावाटी-
यूनिवर्सिटी, कटराथल, सीकर (राजस्थान)

डॉ. कालानाथ शास्त्री का रेडियो रूपक - धर्मस्य तत्त्वम निगुहायाम

लतिका, डॉ. (प्रो.) संतोष कुमार सोरठा

आधुनिक युग में, जब संचार माध्यमों में ध्वनि माध्यमः रेडियो का आविष्कार हुआ, तो रूपक की दुनिया में ध्वनि रूपक के एक नए भेद का एक नया रूप सामने आया। संचार माध्यमों द्वारा रंगमंच में भी क्रांति आई। रूपक जिसे अब तक दृश्यात्मक रूप में माना जाता था जो केवल चाक्षुष रूप में ही परिभाषित था। वह अचानक श्रव्य का विषय हो गया। क्योंकि रेडियो सदैव ध्वनि माध्यम ही रहा है। जहाँ वाचक जो कुछ भी ध्वनि के रूप में प्रसारित करता है सही वही श्रोता के द्वारा श्रवण किया जाता है और अनुभव किया जाता है। चाहे वह गायन संगीत हो या वाद्य संगीत। समाचार प्रसारण हो या कहानी या नाटक प्रसारित होने वाली प्रत्येक विधा ध्वनि के माध्यम से निर्धारित होती है। और श्रवण क्रिया द्वारा ग्रहण की जाती है।

इसलिए जब रेडियो नाटक प्रसारण कार्यक्रम लोकप्रिय हुए, तो भरत मुनि की रंगमंच की परिभाषा भी माध्यम के अनुसार बदल गई। नाटक भी श्रव्य हो गया। रेडियो नाटक में दृश्य प्रत्यक्षता की विशेषताएँ नहीं होती हैं, हालांकि श्रोता नाट्य प्रसारण में शब्दों, ध्वनियों और संगीत को सुनता है और अपनी कल्पना को निर्देशित करता है वैसा ही श्रव्य कविताओं में होता है।

संस्कृत भाषा में भी ध्वनि रूपकों का आलेखन किया गया अनेकों आचार्यों ने इस क्षेत्र में अपनी विशेष छाप छोड़ी और आधुनिकता के इस मंच में पर स्वयं के आलेखन को सफल बनाया।

रेडियो नाटक की परिभाषाएं

रेडियो नाटक हिन्दी नाटक की अत्याधुनिक उपलब्धि है और श्रोताओं में अत्यन्त लोकप्रिय है। विभिन्न विद्वानों ने इसे अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है।

डॉ० रामकुमार वर्मा रेडियो नाटक को ध्वनि नाटक कहते हैं और प्रो० रामचन्द्र महेन्द्र- ध्वनि एकांकी। हरिश्चन्द्र खन्ना के कथनानुसार - रेडियो नाटक के प्रारम्भिक काल में, एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया जो अब रेडियो नाटक का मूलभूत सिद्धान्त है, वह यह है कि घटना प्रधान नाटक की अपेक्षा विचार प्रधान या वातावरण प्रधान नाटक ही रेडियो के लिए अधिक उपयुक्त, अधिक सफल और प्रभावोत्पादक होता है। कारण यह है कि, अरूप और सूक्ष्म जितनी सफलता से रेडियो द्वारा प्रसारित हो सकता है उतना रूपायित और स्थूल नहीं।

रेडियो आलेख का सर्वप्रथम गुण उसका स्थापत्य है। लुई मैकनीस रचनाकार के लिए रेडियो अभिव्यक्ति का आदर्श माध्यम है इसमें लेखक की गुणवत्ता ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। रेडियो नाटककार यह आशा नहीं कर सकता कि कैमरे के मनमोहक कार्य एवम् अतिदर्शनीय रंगमंचीय प्रभाव उसकी शैलीगत दुर्बलताओं को दूर कर देंगे।

- मार्टिन एसलिन

Val Gielgud dh iqLrd "The right way to radio play writing में लिखा है Broadcasting is simply another medium to telling a story. The novelist uses the medium of living actors the cinema uses the medium of the camera and broadcasting users that of the microphone.

रेडियो नाटककार के लिए आवश्यक है कि वह कल्पनाजीवी हो। कल्पना जितनी तीव्र होगी लेखन उतना सशक्त होगा। मानवीय कल्पना में भी जो भी सम्भव है वह रेडियो नाटक में चित्रित हो सकता है क्योंकि रेडियो नाटककार के पास एक विशाल कैनवस होता है जिसमें वह अपनी कल्पना से शब्दों रूपी तूलिका द्वारा जीवन के अनेक रंग भर सकता है, मानव जीवन के सुन्दरतम चित्रांकित कर सकता है। रंगमंचीय नाटक की भांति श्रोता चाक्षुष सुख की अनुभूति कर सकता है जे० एल० स्टाइन ने लिखा है- "रेडियो का अन्धा माध्यम कल्पना को अनुप्रमाणित करने की अपनी बेजोड़ शक्ति के कारण एक ऐसे नाट्य प्रकार को सम्भव बनाता है। जो उन विषयों का भी समावेश कर सकता है जिनके निकट फिल्म और रंगमंच कभी नहीं पहुंच सकते।

मार्टिन एससिन का कहना है "रेडियो नाटक लेखक को अनुमति देता है कि वह श्रोता को अपने नायक के मन के अन्दर ले जाए अथवा उसका नायक सीधे श्रोता को ही सम्बोधित करे जिससे श्रोता मुख्य पात्रों की आंखों से नाटक के कार्य व्यापार को देख सके या कान में चुपके से कहीं जाने वाली उसकी गोपनीय बातों को सुन सके।"

रेडियो नाटक का सीधा सम्बन्ध श्रोताओं के अन्तर्मन से हो जाता है रेडियो निसर्गतः अन्तर्मन का नाटक है अभिव्यक्ति का अत्यन्त आत्मीय माध्यम है। यह आत्मनिष्ठ नाट्य रूप है रेडियो नाटक के अतिरिक्त ऐसी कोई विधा नहीं है जो मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को स्पष्टता और प्रभावोत्पादकता से व्यक्त कर सके। रंगमंच पर यह सम्भव नहीं। रेडियो नाटककार मानवीय स्पन्दनों का कुशल चित्राकार होता है इसमें यद्यपि कलाकारों तथा श्रोताओं का प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता किन्तु फिर भी संवेदना के स्तर पर श्रोता कलाकारों से किसी न किसी रूप में जुड़ जाता है और उससे तादात्म्य स्थापित कर लेता है। यही रेडियो नाटक की सफलता है। जिसमें डॉ. कलानाथ शास्त्री का नाम अग्रगण्य है देवर्षि कलानाथ शास्त्री का जन्म 15 जुलाई 1936 को जयपुर, राजस्थान में हुआ।

परिचय

आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से संस्कृत साहित्य में साहित्याचार्य तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। आपने संस्कृत साहित्य का अध्ययन अपने विद्वान पिता श्री भट्टमथुरानाथ शास्त्री तथा वहाँ के शिखर विद्वानों म.म. पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, पं. पट्टाभिराम शास्त्री, आचार्य जगदीश शर्मा, आशुकवि पं. हरिशास्त्री आदि से किया। अंग्रेजी साहित्य के प्राध्यापक के रूप में आपने दशकों तक राजस्थान विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। आपने अंग्रेजी साहित्य के अलावा वेद, भारतीय दर्शन, भाषाशास्त्र आदि का गहन अध्ययन करते हुए बंगला, गुजराती, तेलुगु आदि लिपियों पर मौलिक शोधकार्य किया है। आप बचपन से ही संस्कृत के छन्दों के लेखन और गायन में प्रवीण रहे। आपने संस्कृत साहित्य का अवगाहन करते हुए एक नए छन्द का निर्माण भी किया जिसका नाम पण्डित पद्मशास्त्री जी ने आप ही के नाम से 'कलाशालिनी' रखा। यह सम्पूर्ण संस्कृत जगत के लिए एक महान उपलब्धि रही है।

आपके द्वारा हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी भाषा और भारतीय संस्कृति विषयक अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं जिनमें प्रमुख ग्रंथ निम्न हैं-

'जीवनस्य पृष्ठद्वयम्' (उपन्यास), आख्यानवल्लरी, (कथासंग्रह) 'नाट्यवल्लरी' (ध्वनिनाटकसंग्रह), 'सुधीजनवृत्तम्' (जीवनी संग्रह), कवितावल्लरी' (काव्य संग्रह), आधुनिक काल का संस्कृत गद्य साहित्य, मानक हिन्दी का स्वरूप, संस्कृत साहित्य का इतिहास, भारतीय संस्कृति- स्वरूप और सिद्धान्त, संस्कृति के वातायन, पोयट्री ऑफ जगन्नाथ पंडितराज, हॉराइज़न्स ऑफ़ संस्कृत आदि प्रमुख रहें हैं।

चूंकि उन्होंने अनेक ध्वनि रूपकों की रचना की जिनका संकलन उन्होंने संस्कृत नाट्य वल्लरी नामक पुस्तिका में किया। यहाँ डॉ कलानाथ शास्त्री के ध्वनि रूपक निहित धर्मस्य तत्त्व गुहायाम का संक्षिप्त समालोचनात्मक अध्ययन करेंगे।

①प्राथमिक जानकारी और संदर्भ - (Basic Context)--धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम नामक ध्वनि रूपक डा. कलानाथ शास्त्री द्वारा रचित मौलिक सामाजिक रेडियो नाटक है जिसमें समाज में व्याप्त रुढ़िवादिता, धर्म के नाम पर संकीर्ण स्वार्थाधिता तथा कट्टरपंथी विचारों पर व्यंग्य है तथा समाज कल्याण को धर्म की कसौटी बताया गया है। इस कथावस्तु को लेकर एक पाखंडी, पुराणपन्थी व लालची पंडित, एक सत्यनिष्ठ, धर्मात्मा, समाज सेवी शिक्षक, एक धनलोलुप व कुटिल असामाजिक पंडा, तथा एक सच्चरित्र भोली स्त्री के चरित्र भलीभांति उभारे गये हैं। सत्यव्रत को नायक बनाकर लेखक ने इस बात को उजागर करने का प्रयत्न किया है कि सत्यनिष्ठ, समाजसेवक शिक्षक ग्रामों के तथा उपनगरों के पिछड़े वर्गों के अन्धविश्वासों को दूर कर वास्तविक कर्मयोग तथा भारतीय धर्म की सच्ची प्रेरणाकिस प्रकार दे सकता है तथा इसी दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों के उत्थान में शिक्षक-समाज की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है यह भी इससे स्पष्ट हो जाता है।

समय सीमा -- यह ध्वनि रूपक रेडियो घर लगभग 15-20 मिनट में प्रसारित करने योग्य है

②श्रव्य और तकनीकी पक्ष (Audio & Technical Analysis)

ध्वनि प्रभाव--सभी प्रकार के दृश्यों को जीवन्त बनाने के लिए आचार्य डॉ. कलानाथ शास्त्री जी ने पृष्ठभूमि भावों वाली ध्वनियों का प्रयोग किया है। जैसे - ध्वनि रूपक के प्रथम प्रक्रम में ही हम देखते हैं (सुनते हैं, कि पण्डित धर्मानन्द लोगों को गीता का उपदेश देते हो और हरे हरे की ध्वनि वाला सामुहिक कोलाहल सुनाई पड़ता हो) द्वितीय प्रक्रम में विवाह मन्त्रोच्चारण की ध्वनि सुनाई पड़ती हो संगीत संयोजन--संस्कृत के शब्दों के साथ पार्श्व संगीत का तालमेल भी उच्च श्रेणी का है तृतीय प्रक्रम में अग्नि दृश्य उपास्थित किया गया है। जिसमें प्रक्रम के प्रारम्भ में ही (अग्निशिखना ध्वन्यः!) अग्नि लपटों की ध्वनि सुनाई पड़ती है। श्रोता १- अरे अनर्थः संजातः। भीषणो अग्निः। श्रोता 2 अरे वराकस्य धर्मानन्द - पंडितस्य गृहे किमिद संकटमापन्नम्

- इस प्रकार जलती हुई अग्नि की ध्वनि प्रस्तुत कर लेखक के द्वारा अग्नि दृश्य को जीवन्त बनाने प्रयास किया गया है। किंतु इसकी पूर्ण सफलता लेखक पर निर्भर न होकर के रेडियो पर प्रसारित करने वाले निर्देशक व संगीत संयोजन करने वाली टीम पर होती है।
- इस प्रकार अनेकों विभिन्न ध्वनि कारकों द्वारा ध्वनि को उत्पन्न कर रूपक को जीवन्त बनाया जा सकता है जिससे कथा का प्रत्येक हिस्सा श्रोता के हृदय तक उसी भाव सहित पहुंचे जिस भाव में लेखक ने उसको लिखा है।
- इसी प्रकार रूपक के अंतिम प्रक्रम षष्ठम प्रक्रम में निर्जन शून्य रात्रि का वर्णन किया गया है इस प्रकार रात्रि की ध्वनि उत्पन्न करना भी सहज जान पड़ता है रचनाकार ने प्रारम्भ में ही लिख दिया है कि
- निर्जने शून्या रात्रिः, कदाचित्कुक्कुरश्चान ध्वनि)
- संवाद :-

इस नाटक धर्मस्य तत्त्व निहितं गुहायाम् में संवाद अत्यन्त सुबोध व भाषा सरलतम है।

- कथा की धारा प्रवाहिता इतनी सरल है कि संवाद एक के बाद एक श्रोता के मस्तिष्क पटल पर उतरता जाता है।
- रचनाकार ने कही पर भी दीर्घ समास व श्लेष युक्त शब्दों का प्रयोग नहीं किया है।
- मोहनः -कथय कथं समागतः ।

• सत्यव्रत -मया श्रुतं यद्धर्मानन्द पंडितो भवद्गोहे निवसतिः।

• मोहन. निवसत्येव त्विं किं चिन्तयति स आतपेप्लास्ट भूत्वा म्रियेत?

शैली व रस

इस रेडियो रूपक में शांत, हास्य व करुण रस का एक बहुत सुंदर समायोजन किया गया है। षष्ठ प्रक्रम में लेखक ने करुण रस का वर्णन और पश्चाताप की अग्नि में जलते हुए ब्राह्मण धर्मानंद का संवाद प्रस्तुत किया है

वाचा कर्मणा तत्पालितमपि।

धर्मा० अरे किं सत्यव्रतो वस्तुतः एवं महात्मा वर्तते शुद्धात्मा ?

अहमेव नीचोऽस्मि किमधुना करोमि ? सत्यव्रत। (द्वारि आकारण ध्वनिः श्रूयते)

सत्य० अरे इयं तु पंडितधर्मानन्दस्येव वाणी।

धर्मा० सत्यव्रत। अपावृणु द्वारम् ।

सत्य० आगम्यतां पंडित-महोदयाः ! वन्दे।

धर्मा० सत्यव्रत, मा मां नमस्कार्षीः। मा स्पृश। अहं पापी अस्मि।

अहम् अन्धोऽस्मि ।

सत्य० किमेवमुद्दिगिरति भवान् ? किं संजातम् ?

ध्वनि रूपक पूर्णतः सफल है। भाषा शैली सरल है जिसको वक्ता आसानी से भावों में पिरो कर श्रोताओं तक पहुंचा पाता है समय सीमा की दृष्टि से भी लेखक ने नाटक को बड़ा न रखकर 10-15

मिनट के कथानक का ही प्रयोग किया है ताकि श्रोता समयावधि की अधिकता से झूझे।

- कथानक रोचक है जो श्रोता को बाँधे रखता है डॉ. कलानाथ शास्त्री लेखन की अन्य विद्याओं के साथ-साथ ध्वनि रूपक लिखने में भी सिद्धहस्त हैं।

नाटक :- (अ) मौलिक नाटक

मौलिक नाटक की भौतिक सर्जना होती है। किसी भी कथावस्तु को संवाद, ध्वनि प्रभाव और संगीत तथा रेडियो की तकनीकियों में बांधकर नाट्य रचना की जाती है इसमें नाटककार अपनी कल्पना के रंग भरता है, अपने ही अनुसार पात्रों के चरित्रों की सृष्टि करता है और वातावरण का प्रदर्शन करता है, यह उसकी अपनी कृति होती है।

डॉ.कलानाथ शास्त्री द्वारा रचित यह ध्वनि रूपक मौलिक है। यह किसी भी अन्य कथा का रूपांतर नहीं है और न ही किसी अन्य कथा को आधार बनाकर इस ध्वनि रूपक को तैयार किया गया है।

लेखक ने इस नाटक की पृष्ठ भूमि सामाजिक रखी है। जो नितान्त दैनिक जीवन का हिस्सा है। जीवन की यथार्थता को दर्शाता हुआ यह रूपक लेखक की मौलिक रचना है

सन्दर्भ

Dr. Nagendra (2016). Radio Programme Production, Kanishka Publishers, Distributor, New Delhi

K. M. Srinivastava (1989). Sterling Publishers Pvt. Ltd., New Delhi 1989

आलोक सक्सेना- आकाशवाणी जी आवाज का जादूगर उद्घोषक, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली -2

कौशल शर्मा (2007). रेडियो प्रसारण, प्रतिमा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

Martin Shingler and Cindy (1998). Waringa, Arold Publication, New York

I am Hargreaves (2003). Journalism Truth or Dare, Oxford University Press.

Philip Rayner (2001). Peter Wall, Stephen Ksuger Media Studies The essential Introduction Rautledge New York -

Warm K. Agree (1979). Introduction to Mass Communication, Oxford IBH Publishing Co. New Delhi.

डॉ.कलानाथ शास्त्री, नाट्यवल्लरी (धर्मस्य तत्त्वम निगुहायां)

रेडियो लेखन , राजेंद्र मिश्र

मीडिया लेखन, यू.सी.गुप्ता

रेडियो नाटक, मदन शर्मा

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन , डॉ.हरीश अरोड़ा

रेडियो प्रोग्राम और प्रोडक्शन तकनीक, अरविंद कुमार सिंह